यीशुः
जिसमें सब आशिषें हैं

परमेश्वर वर्षा, धूप और संसार की सभी आशिषें (पवित्र लोगों) मसीही लोगों और पापियों दोनों को देता है (मत्ती 5:45)। वह धर्मी और दुष्ट दोनों को ही ''आकाश से वर्षा और फलवंत ऋतु देकर, [उनके] मन को भोजन और आनन्द से भरता'' है (प्रेरितों 14:17)। परन्तु आत्मिक आशिषें सभी को नहीं मिलती हैं। परमेश्वर को यह अच्छा लगता है जब उसका इकलौता पुत्र सारी आत्मिक आशिषों को बांटता है (यूहन्ना 10:9; 14:6; 15:5; प्रेरितों 4:12; कुलुस्सियों 1:27)। यीशु के बाहर कोई आत्मिक आशीष नहीं है; सभी आत्मिक आशिषें उसी में हैं (इफिसियों 1:3)।

मसीह से बाहर रहने वालों के पाप और बुराइयां ही उनकी विरोधी होती हैं; परन्तु जैसे ही कोई व्यक्ति मसीह में आता है, तो उसे उसकी ओर से जो झूठ नहीं बोल सकता प्रतिज्ञा मिलती है कि उसका प्रत्येक पाप क्षमा कर दिया गया है और भुला दिया गया है (इब्रानियों 8:12)। मसीह से बाहर रहने वाले स्वर्ग से आए मेहमान अर्थात परमेश्वर के आत्मा के साथ आनन्द नहीं कर सकते, परन्तु वह उन सब के साथ रहने के लिए आता है जो यीशु की आज्ञा मानते हैं (यूहन्ना 14:17; प्रेरितों 2:38; 5:32; गलतियों 4:6)।

अविश्वासी लोग अपने ही प्रकाश में खड़े होकर अपने ही विरुद्ध काम कर रहे हैं। जो लोग मसीह में प्रवेश कर गए हैं उन्होंने अपने आपको संसार के नियमों से सहमत कर लिया है। उन्हें प्रतिज्ञा मिल गई है कि सब वस्तुएं भलाई को ही उत्पन्न करती हैं (रोमियों 8:28)।

परमेश्वर में विश्वास करने वाले परन्तु मसीह से बाहर रहने वालों को भी प्रार्थना करके ''हे हमारे पिता'' कहने का अधिकार नहीं है। सही ढंग से वे केवल ''हे हमारे सृजनहार'' ही कह सकते हैं। इसके विपरीत, मसीह में आए हुओं को परमेश्वर के परिवार में गोद ले लिया गया है। वह उन्हें ''अब्बा अर्थात पिता'' कहते सुनकर आनन्दित होता है (गलतियों 4:5-7)। इसी प्रकार, मसीह से बाहर रहने वालों का कोई बड़ा भाई भी नहीं है जो उनकी ओर से बात कर सके। यीशु परमेश्वर के परिवार के सदस्यों के बड़े भाई के रूप में उनके लिए एक धर्मी सहायक और बिनती करने वाले के रूप में परमेश्वर के पास है (इब्रानियों 7:25; 1 यूहन्ना 2:1, 2)।

गैर मसीही संगठनों में सामान्यत: आत्मिक तत्व की कमी होती है जो मसीही लोगों के जीवनों और सम्बन्धों को समृद्ध करती है। जब कोई व्यक्ति यीशु में आता है तो वह पृथ्वी

के सबसे अच्छे लोगों की संगति में आ जाता है। उनका नैतिक चरित्र बहुत ऊंचा होता है और उनके उद्देश्य (पिता की इच्छा को पूरा करना; यूहन्ना 6:38) की पृथ्वी पर कोई तुलना नहीं है। मसीह में आने वाले की उन लोगों से संगति होती है जिन्हें ज्योति के पवित्र लोगों की मीरास का सहभागी होने के योग्य बनाया गया है। वह अब अपना समय उनके साथ नहीं बिताता जो बाहर अंधकार में फैंकने के योग्य हैं (कुलुस्सियों 1:12; मत्ती 25:30)।

पवित्र शास्त्र की दो आयतें ही बता देती हैं कि लोग मसीह में कैसे प्रवेश करते हैं:

> क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? (रोमियों 6:3)।
>
> और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है (गलतियों 3:27)।

ये दोनों पद बताते हैं कि मसीह में बपतिस्मा लेकर प्रवेश किया जाता है। सच्चे मन से विश्वास और मन फिराने के बाद, मसीह में आने वाले लोगों के लिए बपतिस्मा अन्तिम आज्ञा है। दूसरी बहुत सी आज्ञाएं बाद में आती हैं, परन्तु मसीह *में* और मसीह *से बाहर* होने के लिए बपतिस्मा विभाजन रेखा है।